IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षण की कहानी विधा का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन

शोधकर्त्री
श्रीमती सत्यप्रभा शर्मा
आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय
सरदार शहर, चुरू (राज.)

शोध निर्देशिका
डॉ. रंजीता वैद
आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय
सरदार शहर, चुरू (राज.)

सार/संक्षेप (Abstract)

वर्तमान समय में समाज में नैतिक मूल्य क्षरण की समस्या एक विकराल रूप धारण किए हुए है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली, बालकों में नैतिक मूल्यों का बीजारोपण करने में लगभग अक्षय सिद्ध हुयी। भैतिकवादिता को सर्वोपरि मानने वाले इस समाज में नैतिक मूल्य मात्र पुस्तकों में संकलन मात्र रह गये है। इस परिदृश्य को दृष्टिगत रखते हुए इस शोध कार्य में शिक्षण की कहानी विधा द्वारा बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास पर अध्ययन किया गया है।

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में शिक्षण की कहानी, विद्या का नैतिक मूल्यों यथा परोपकार, सेवा, क्षमा, ईमानदारी, शील पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

इसमें 10 प्रश्नों की नैतिक मूल्य मापनी का निर्माण किया गया है जिसमें, परोपकार, सेवा, क्षमा, ईमानदारी, शील मूल्यों पर प्रश्न सम्मिलित है। इस परीक्षण को राजकीय विद्यालय के 100 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षस्वरूप दत्त विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षण की कहानी विधा द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास की पर्याप्त संभावना हैं।

प्राचीन भारत में व्यक्ति में सद्विवेक जागृत करके उसे सदाचरण के लिये प्रेरित करना और धार्मिक परिवेश में उसके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य था। व्यक्ति के चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व का विास, सामाजिक कर्तव्यों का पालन, जीविकोपार्जन की क्षमता तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार जैसे व्यापक उद्देश्य प्राचीन शिक्षा की विशेषता थे। आधुनिक शिक्षा में चरित्र निर्माण की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता। स्वतंत्रता के उपरान्त शिक्षण संस्थाओं में मूल्य

शिक्षा का कोई वांछित स्थान नहीं रहा तथा नैतिकता के शिक्षण की आवश्यकता प्रतीत (अनुभूत) की जाती रही है।

स्वतंत्रता के पश्चात जितने भी शिक्षा आयोग गठित किये गये, सभी ने एकमत से मूल्य या नैतिक शिक्षा को उपयोगी व आवश्यक समझा हैं स्वतंत्रता के उपरान्त (राधाकृष्णन), विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49), माध्यमिक (मुदालियर) शिक्षा आयोग (1952–53), मूल्यांकन समिति (1956) तथा शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग) (1964–66) ने नैतिक शिक्षा शिक्षण को समुचित महत्व दिया है।

कोठारी आयोग ने तो विद्यालयों में योजनाबद्ध रूप से नैतिक शिक्षा के अंतर्गत विविध मानव मूल्यों के शिक्षण को प्रारम्भ करने का सुझाव दिया दिया था। आयोग के अनुसार "आज के शालेय पाठयक्रम का एक गंभीर दोष यह है कि उसमें हमारे नैतिक, सामाजिक एव आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण का कोई प्रावधान नहीं है। अधिकांश भारतीयों के जीवन मे धर्म एक महान प्रेरक शक्ति के रूप में विद्यमान है, जो कि चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के आभ्यन्तरीकरण से घनिष्ठतः सम्बद्ध है। कोई भी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली जो लोगों के जीवन, उनकी आवश्यकताओं एवं आकाक्षाओं से सम्बद्ध है, इस महत्वपूर्ण शिक्त की उपेक्षा नहीं कर सकती। इसलिए हम इस बात की अनुशंसा करते है कि जहाँ भी संभव हो, विश्व के महान धर्मों की नैतिक शिक्षाओं के माध्यम से सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण के लिये जागरूक एवं संगठित प्रयास किये जाने चाहिए।"

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम को देखकर यह प्रश्न हमारे सामने उभरता है कि क्या मूल्यपरक शिक्षा पाठ्यक्रम से सहज संभव है? क्या हमारे पास ऐसे शिक्षक है जो मूल्यगत शिक्षा की खूबियों को उजागर करके सुपरिणाम दिखा सके, जो व्यक्तिगत आचरण से गुरू गरिमा प्रस्तुत कर छात्रों को आदर्श चरित्र निर्माण की प्रेरणा दे सके? क्या इस भौतिकवादी वातावरण में शिक्षक आत्मत्यागी बनकर इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को पूर्ण कर सकेगा?

यह शिक्षा पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तकों से नहीं दी जा सकती। यह तभी संभव है, जब विद्यार्थियों को विविध कार्यकलापों के माध्यम से कक्षा और कक्षा के बाहर संवेदनशीलता, त्याग, निष्ठा, परोपकार, आत्मसंयम आदि मूल्यों को आत्मसात करने के अवसर दिए जांए। प्राचीनकाल में परिवार में बालकों को मूल्याधारित कहानियां सुनाकर संस्कारित करने का प्रयत्य किया जाता था। कहानियों को आधुनिक शिक्षण व्यवस्था में एक शिक्षण विधा के रूप में अपनाया गया है।

कहानी विधा द्वारा सरलता एवं सहजता से विद्यार्थियों में मूल्यारोपण किया जा सकता है। उनके मन मस्तिष्क पर कहानी द्वारा ऐसा प्रभाव छोड़ा जाए कि बालक स्वप्रेरित होकर मूल्याधारित मार्ग का अवलम्बन करें।

अध्ययन की आवश्यकता

यह अध्ययन समाज के परिवार व बालक–बालिकाओं को एक नई दिशा प्रदान करेगा व सामाजिक मूल्यों की आवश्यकता का अहसास बालकों के मन में उत्पन्न करेगा जिससे वे स्वतः ही सही–गलत का ज्ञान कर पायेंगे। यह शोधकार्य ने केवल विद्यार्थियों अपितु समाज, परिवार, शिक्षकों के मानस का विस्तार करने में योगदान देगा। यह अध्ययन शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस क्षेत्र में शोधकार्य अपेक्षाकृत कम हुए है और वर्तमान समाज की दशा को देखतजे हुए यह प्रासंगिक भी है।

संदर्भ साहित्य

पूर्व में भी इस शोध विषय से सम्बन्धित कुछ अध्ययन किये गये है। जैसे –

चतुर्वेदी, अर्चना (2001) ने "विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। इसके निष्कर्ष में हिन्दू संस्कृति के सरस्वती शिक्षा मंदिरों के छात्र–छात्राओं में सृजनात्मक योग्यता, नैतिक मूल्य और राष्ट्रीय चेतना पश्चिम संस्कृति के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं से अधिक पायी गयी। रस्तोगी, के.जी. (2002) ने "व्यावसायिक शिक्षा की विधियां के माध्यम से मूल्य ग्राह्यताओं का अध्ययन" विषय पर शोध कर निष्कर्ष में पाया गया कि मौखिक विधि से वाद–विवाद, व्याख्यान, मूल्य अध्ययन विधि से वर्णनीय व व्यवहारात्मक मूल्य विकसित होते है। शर्मा, श्रीमती रमा (2009) ने "सेवारत एवं गैर सेवारत महिलाओं के बच्चों की सृजनात्मकता, समायोजन एवं व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन" शीर्षक पर पीएच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और पाया कि शहरी क्षेत्र में सेवारत महिलाएं, गैर सेवारत महिलाओं की अपेक्षा अपने बच्चों में प्रजातांत्रिक मूल्योकं के विकास में अधिक योगदान करती है। गैर सेवारत महिलाएं अपने बच्चों को धार्मिक संस्कार देने, उन्हें समाज का उपयोगी नागरिक बनाने व शरीर को स्वस्थ रखने में अधिक सहयोग देती है।

सिंह कश्मीर (2017) ने "उच्च माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों में समर्पण की भावना, समायोजन एवं नैतिक मूल्यों का अध्ययन" शीर्षक पर पीएच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया। इन्होनें अपने अध्ययन के निष्कर्षों में पाया कि उच्च वर्ग के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के सम्बन्ध में झूठ बोलने की प्रवृत्ति में सार्थक अंतर हैं झूठ बोलने की मात्रा एकल परिवारों के विद्यार्थियों में थोड़ी अधिक पायी गयी।

विदेशी शोध अध्ययन

ली (2001) "विज्ञान व तकनीकी विकास के चलते उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं का मानवीय मूल्यों की पृष्ठभूमि में समाधानीय अध्ययन" में पाया कि मूल्य रहित शिक्षा की अवधारणा के कारण ही इस प्रकार की समस्याएं व्यापक रूप लेती है। मूल्य आधारित शिक्षा से संस्कार युक्त विकास व उत्तरदायित्व वहन करने की भावना उच्च स्तर की होती है। फलतः पर्यावरणीय संरक्षण व सतत् विकास के प्रति संवेदनशीलता का स्तर बढ़ता है।

साचा, पावंज (2010) ने प्रारम्भिक शिक्षा और देखभाल में मूल्य "छुपाना एवं खोजना" विषय पर केन्टरवर्ड चर्च विश्वविद्यालय से शोध किया और इंग्लैण्ड की प्रारम्भिक शिक्षा और देखभाल व्यवस्था में नवीन बालकों के चरित्र व मूल्य पर लोगों का प्रभाव पाया गया, परन्तु बालकों के मूल्य एवं परिस्थितियों की स्पष्ट आवश्यकता और अनुभवों के विकास का विवरण मिलता है। जो वैश्विक मूल्यों को उनके कार्यो में परिणित करता हैं। व्यैक्तिक एवं संकलित मूल्यों में 5 वर्षों के बालकों ने विशेष उपलब्धि प्राप्त की।

विलियम्स, मॉर्गन टायलर (2016) ने "गैटिंग टू द हार्ट ऑफ द मैटर कॉन्सेप्चुलाइजिंग कैरेक्टर एजुकेशन एण्ड यूजिंग चिल्ड्रन लिट्रेचर टू प्रमोट वैल्यू इन स्कूल्स" विषय पर अध्ययन किया। यह इस बात का अध्ययन है कि कैसे चरित्र शिक्षा की संकल्पना की गई और दो चयनित कक्षा शिक्षकों द्वारा विशेष रूप से मूल्यों को बढ़ावा देने के लिये बच्चों के साहित्य के उपयोग के माध्यम से लागू किया गया।

पेलेशिया, विक्टर जं. (2018) ने "वैल्यू वैल्यूज इन एजुकेशन ए स्टडी ऑफ वैल्यूज अलाईमेंट इन द इथीक्ल डिसीजन में किंग ऑफ कैथौलिक स्कूल प्रिंसीपल" विषय पर शोध किया। इस अध्ययन का उद्देश्य कैथोलिक स्कूल प्राचार्यों के नैतिक निर्णय में व्यक्तिगत और संगठनात्मक मूल्यों, उनके प्रभाव तथा संरक्षण का पता लगाना था। इस शोध के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत व संगठनात्मक मूल्यों के संरक्षण व अनुरूपता के संबंध में सैद्धान्तिक ढाँचे के प्रति वैचारिक दिशा प्राप्त हुई।

अध्ययन के उद्देश्य

(1) विद्यार्थियों में परोपकार मूल्य के विकास पर कहानी विधा के प्रभाव का अध्ययन।

(2) विद्यार्थियों में सेवा मूल्य के विकास पर कहानी विधा के प्रभाव का अध्यन।

(3) विद्यार्थियों में क्षमा मूल्य के विकास पर कहानी विद्या के प्रभाव का अध्ययन।

(4) विद्यार्थियों में ईमानदारी मूल्य के विकास पर कहानी विद्या के प्रभाव का अध्ययन।

(5) विद्यार्थियों में शील मूल्य के विकास पर कहानी विधा के प्रभाव का अध्ययन।

न्यादर्श : इस अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन हेतु राजकीय विद्यालय की कक्षा 9 के 100 छात्रों को विषय पात्र चुना गया।

विधि : कथात्मक विद्या का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों को नैतिक मूल्याधारित कहानियाँ सुनायी गयी।

नैतिक मूल्य मापनी

अध्ययन हेतु दत्त संकलन करने के लिये नैतिक मूल्य मापनी का निर्माण किया गया। इसमें नैतिक मूल्यों के अंतर्गत पाँच मूल्यों परोपकार, सेवा, क्षमा, ईमानदारी, शील पर 10 कथन सम्मिलित किये गये हैं तीन स्केल पद्धति (हाँ, नहीं, कभी–कभी) के आधार पर निर्मित की गई है।

दत्त संकलन

नैतिक मूल्य मापनी को दत्त संकलन हेतु 100 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। जिसका प्रश्नवार विश्लेषण इस प्रकार है।

कथन 1	मैं अपने जेब खर्च को किसी गरीब या जरूरतमंद पर खर्च करना पसंद करता हूँ।	☐	☐	☐
	उपर्युक्त कथन पर 49 विद्यार्थियों ने हाँ, 09 ने कभी–कभी तथा 12 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।			
कथन 2	मेरे घर पर कोई ठंड से पीड़ित व्यक्ति आए तो मैं गर्म वस्त्र देकर उसकी सहायता करूंगा।	☐	☐	☐
	उपर्युक्त कथन पर 52 विद्यार्थियों ने हाँ, 36 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 12 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया दी की।			
कथन 3	मैं अपने बुजुर्ग दादा–दादी की सेवा करना पसंद करता हूँ।	☐	☐	☐
	उपर्युक्त कथन पर 86 विद्यार्थियों ने हाँ, 11 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 3 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।			
कथन 4	मेरे मित्र ने मुझे खेल में जानबूझकर गिराया पर मैं उसे नजरअंदाज करूंगा।	☐	☐	☐

उपर्युक्त कथन पर 40 विद्यार्थियों ने हाँ, 22 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 38 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।

कथन 5 मेरी परीक्षा की कॉपी में गलती से अधिक अंक जुड़ गये तो मैं इसकी जानकारी अध्यापक को दूंगा। ☐ ☐ ☐

उपर्युक्त कथन पर 39 विद्यार्थियों ने हाँ, 23 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 38 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।

कथन 6 यदि मेरे घर पर मेहमान आये तो मैं उन्हें आवश्यकता पड़ने पर अपना कमरा दे दूंगा। ☐ ☐ ☐

उपर्युक्त कथन पर 49 विद्यार्थियों ने हाँ, 40 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 11 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया दी।

कथन 7 मेरे घर के बगीचे में किसी बच्चे ने फूल तोड़ लिया तो मैं बिना कुछ कहे जाने दूंगा। ☐ ☐ ☐

उपर्युक्त कथन पर 46 विद्यार्थियों ने हाँ, 26 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 28 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया दी।

कथन 8 मेरे पालतू जानवर के बीमार होने पर मैं उसकी देखरेख करता हूँ। ☐ ☐ ☐

उपर्युक्त कथन पर 48 विद्यार्थियों ने हाँ, 41 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 11 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।

कथन 9 मैं सभी बड़ों का उचित अभिवादन करता हूँ। ☐ ☐ ☐

उपर्युक्त कथन पर 96 विद्यार्थियों ने हाँ, 3 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 1 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।

कथन 10 मैं दुकानदार द्वारा गलती से ज्यादा रूपये देने पर उसे वापस करता हूँ। ☐ ☐ ☐

उपर्युक्त कथन पर 75 विद्यार्थियों ने हाँ, 15 विद्यार्थियों ने कभी–कभी तथा 10 विद्यार्थियों ने नहीं पर चिन्ह लगा कर प्रतिक्रिया व्यक्त की।

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण को तालिका में निम्नानुसार दर्शाया जा सकता है।

क्र. सं.	कथन / मूल्य	प्रतिक्रिया		
		हाँ	कभी – कभी	नहीं
1.	परोपकार	49	09	12
2.	परोपकार	52	36	12
3.	सेवा	86	11	03
4.	क्षमा	40	22	38
5.	ईमानदारी	39	23	38
6.	शील	49	40	11
7.	क्षमा	46	26	28
8.	सेवा	48	41	11
9.	शील	96	01	03
10.	ईमानदारी	75	15	10

निष्कर्ष : इस अध्ययन के निष्कर्षस्वरूप यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण की कथात्मक विधा द्वारा विद्यार्थियों में मूल्य विकास की पर्याप्त संभावना है। वर्तमान समय को देखते हुए इस विधा का प्रयोग शिक्षण में किया जाना चाहिये जिससे बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास को अपेक्षित दिशा मिल सके और एक संतुलित, श्रेष्ठ व पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण सभंव हो सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन – प्रो. एस.पी. गुप्ता।
2. नैतिक शिक्षा : विविध आयाम – डॉ. महावीर मल लोढा
3. अनुसंधान – परिचर्य – पारसनाथ राय
4. भारतीय शिक्षा के मूल तत्व – लज्जा राम तोमर
5. केत्रसी. मलैया – नैतिक शिक्षा शिक्षण
6. स्वामी विवेकानन्द – शिक्षा

7- ब्लूम. बी.एस. – इवेल्यूएशन इन सैकण्डरी स्कूल्स, न्यू देहली, AICSI, 1958

8- Dissertation Abstracts International, Volume 58, No. 11, May (1997)

9. रस्तोगी, के.जी. "व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से मूल्यग्राहिता, मुक्त शिक्षा, NIOD" नई दिल्ली जन–2002, पृष्ठ सं. 11'33

10. रमा शर्मा (2009), पीएच. डी., उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर

11- सिंह, कश्मीर (2017) पीएच.डी. शोध प्रबन्धन, ओ.पी.जे. एस. विश्वविद्यालय, राजगढ़, चुरू

12- Sixth Survey of Educational Research, Vol. II, (1993-2000) NCERT, New Delhi, 2007, pp. 434.

13- British Journal of Education Studies, Vol. 58, No. 2, June 2010, pp. 213-229.

14- http://etheses.dur.ac-uk/11749/uk.bl.ethos 693515

15- The George Washington University, 2018; 179: 10844863